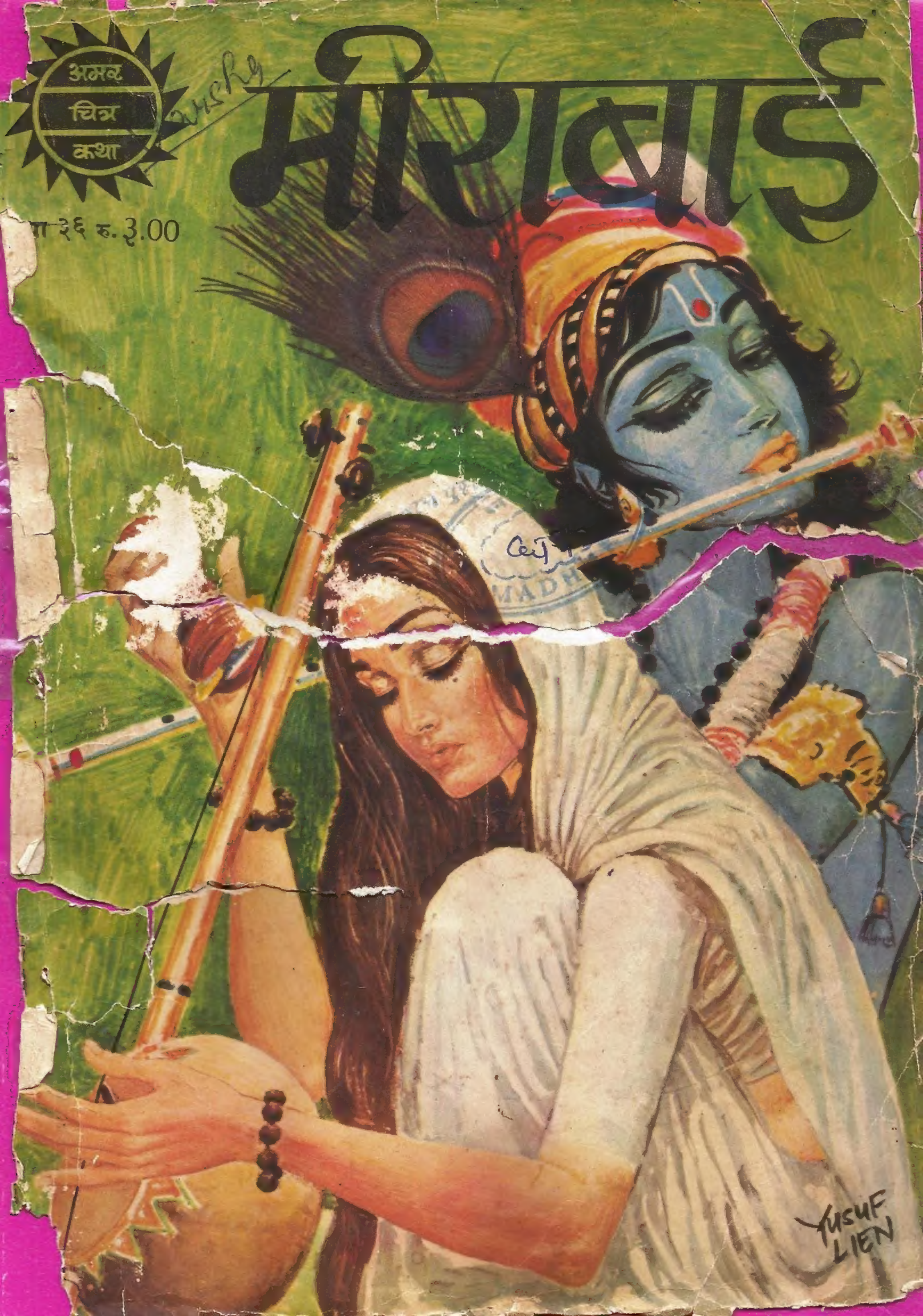

अमर
चित्र
कथा
मीराबाई
ा २६ रु. ३.00
YUSUF
LIEN

कृष्ण के भक्त सारे भारत में पाये जाते हैं। कुछ उनकी बाल-लीलाओं के गुण-गान करते हैं तो कुछ उन्हें गीता के उपदेशक के रूप में पूजते हैं।

कृष्ण का सबसे लोकप्रिय रूप कदाचित् रास-बिहारी का है जिसमें वे चाँदनी रातों में यमुना के तट पर बंसी बजाते हैं। मीरा के भजनों में उनके इस रूप के हमें दर्शन होते हैं।

भारत को सन्त-महात्माओं की खान कहा जा सकता है। परन्तु उन सबमें मीरा का अपना अलग स्थान है। मीरा ने राजघराने में जन्म लिया और विवाह भी राजघराने में हुआ। परन्तु उन्होंने अपने लिए जो राज्य चुना वह था कृष्ण का। कृष्ण को अपना [illegible]ने के बाद जीवन भर वे उस पथ से डिगी नहीं। ल[illegible] अनन्य भक्ति थी उनकी। नासमझ और क्रूर ऐसी [illegible] सम्बन्धी उन्हें भक्ति के मार्ग से मोड़ न सके। वे तो स्वयं को कृष्ण के अर्पण कर चुकी थीं। और पूर्ण-तया कृष्ण की हो चुकी थीं।

उनके अन्तस से निकले हुए भजन कृष्ण की भक्ति से ओत-प्रोत हैं। अपनी मधुरता और सहजता के कारण ये भजन सारे देश में लोकप्रिय हुए! भारतीय सन्त-साहित्य इन भजनों से बहुत समृद्ध हुआ है!

Published by H.G. Mirchandani for India Book House Education Trust, Rusi Mansion, 29, Nathalal Parekh Marg, Bombay 400 039 and printed by Deepak G. Mirchandani at IBH Printers, Marol Naka, Mathuradas Vissanji Road, Andheri (East), Bombay 400 059.

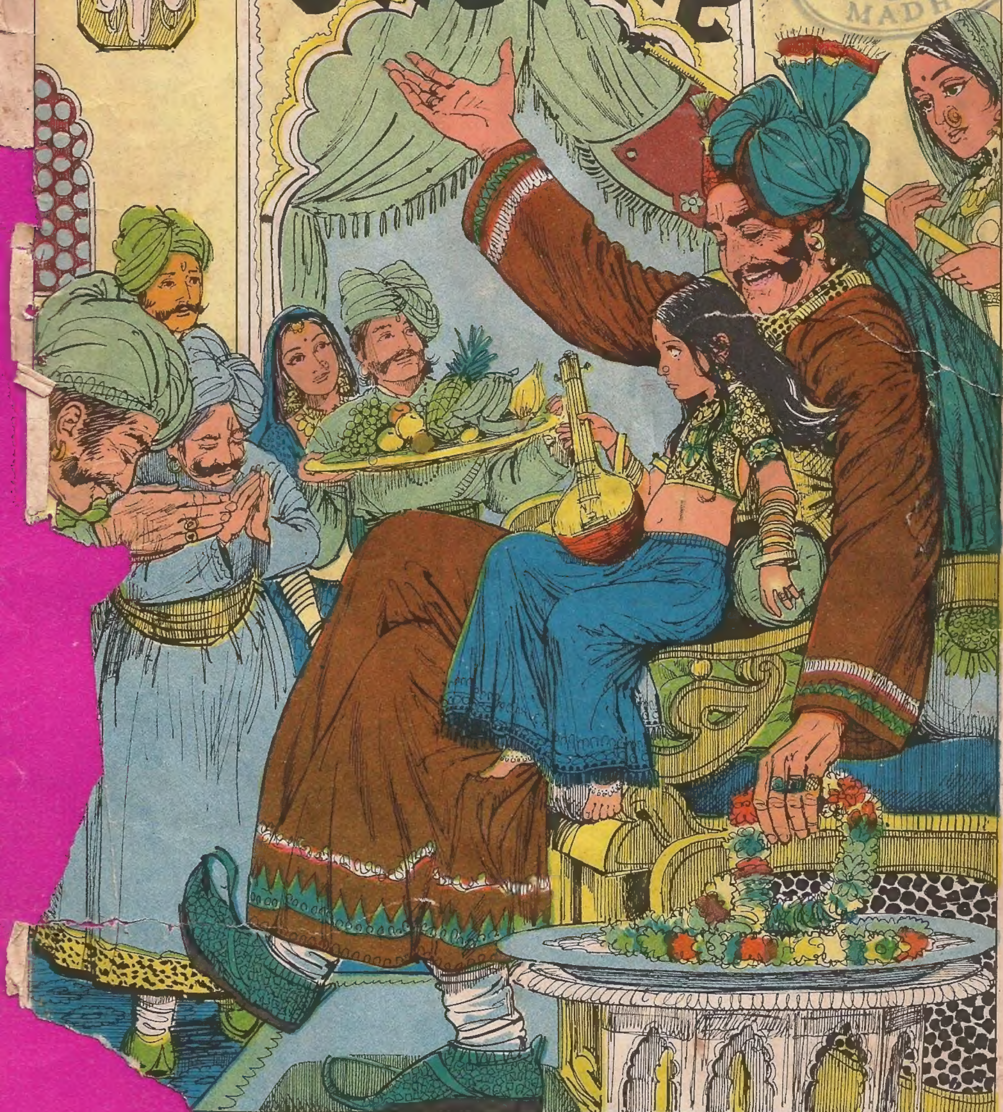
Editor: Anant Pai

Retold by: Kamala Chandrakant

Artwork: Yusuf Lien

Translation: Meena Khanna

मीराबाई



स्थान, के राणा रतनसिंह अच्छे शासक थे और उनकी प्रजा उन्हें चाहती थी। उनके एक बहुत सुन्दर पुत्री थी- **मीरा**

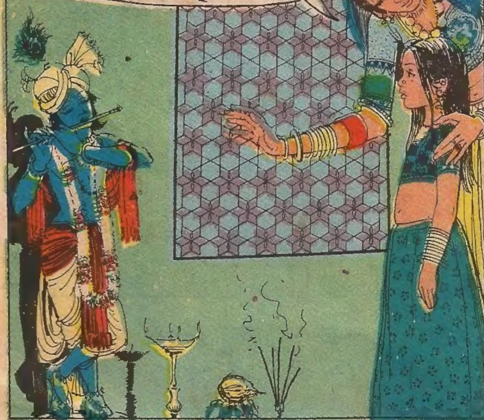
मीरा जब पाँच वर्ष की थी, एक दिन उनके महल के सामने से एक बरात निकली।

माँ मेरा वर कहाँ है?

चल, मैं तुझे उसके पास ले चलती हूँ।

माँ उसे पूजा-गृह में कृष्ण की मूर्ति के सामने ले गयी। मीरा को यह मूर्ति बहुत अच्छी लगी।

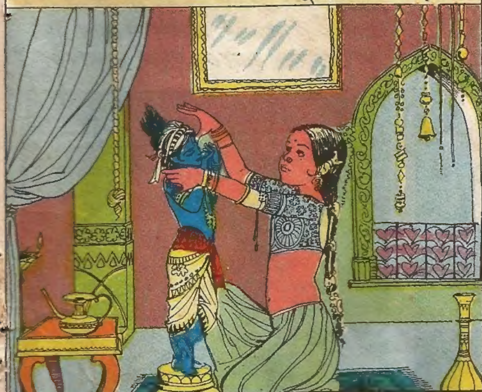
ये हैं तेरे पति! स्वयं गोपाल। तू इन्हीं की सेवा और भक्ति कर जैसे पत्नी अपने पति की करती है।

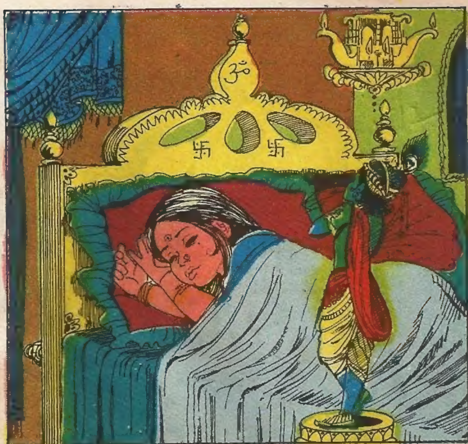


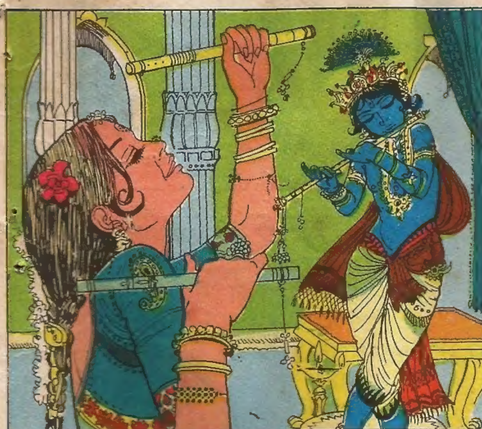
मीरा ने अपनी माँ की बात गाँठ बाँध ल



उसने बालकों के सब खेल-कूद त्याग दिये।



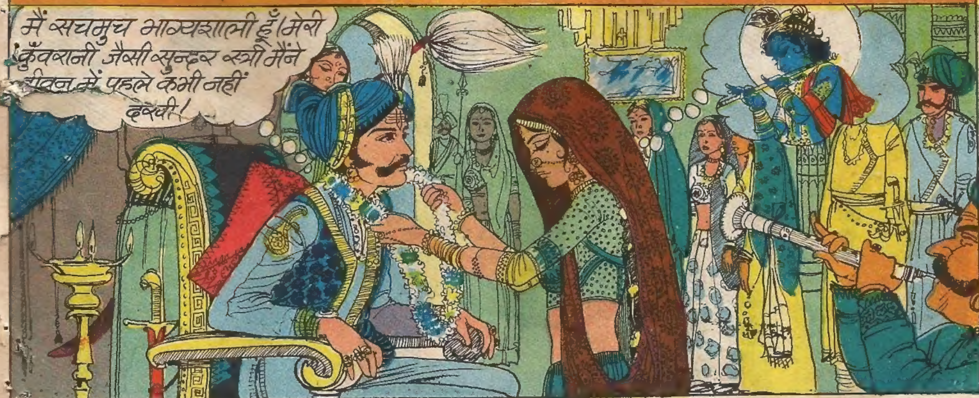






वर्ष बीतते गये और अपने दैवी पति के प्रति मीरा का प्रेम प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता गया।

एक दिन बरात आयी और मीरा का विवाह चित्तौड़ के राजकुमार भोजराज से कर दिया गया। भोजराज शूरवीर था और मुग़लों से बेहद घृणा करता था।




मीरा आदर्श हिन्दू पत्नी थी।
उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था।


परन्तु गृहस्थी का नित्य-प्रति का काम पूरा करते ही मीरा अपने दैवी पति– गोपाल के ध्यान में लग जाती थी, जिसकी मूर्ति वह पीहर से साथ लायी थी।


उसकी सास को यह बात नहीं सुहाती थी।
हमारी कुल देवी दुर्गा हैं। उनकी पूजा किया करो।


मीरा को यह स्वीकार न था।
क्षमा करो, माँ जी, मैं तो अपने को भगवान् कृष्ण के अर्पण कर चुकी हूँ। और किसी देवी-देवता की पूजा नहीं कर सकती।

भोजराज की बहन ने भी प्रयत्न किया परन्तु असफल रही।



उसने क्रोध में भर कर बदला लेने का निश्चय किया।



ऊदा सहेलियों के साथ भोजराज के पास आयी।

क्षमा करना, भाई, क्या आपका अपनी पत्नी पर कोई अधिकार नहीं है? क्या आपके पौरुष में कमी है? लज्जा का विषय है कि आपकी पत्नी अपनी करतूतों से चित्तौड़ पर और आप पर कलंक का टीका लगा रही है।





भोजराज तुरन्त तलवार खींच कर मन्दिर के अन्दर गया -

बता तेरा प्रेमी कहाँ है - उसे मार डालूँगा!

मीरा लागो रंग हरि। औरन सब रंग अटक परी॥

भोजराज को विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी पागल है। उसे प्रसन्न रखने के लिए उसने एक मन्दिर बनवा दिया ताकि वह अपने प्रेमी की मूर्ति की जी भर के पूजा कर सके! कुछ ही दिनों में मीरा के पास भक्तों की भीड़ जमा होने लगी। वह अपने भगवान के सामने गाती, नाचती और प्रेम में बेहाल हो जाती।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर -

भगवान कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति तथा उसके नाचने, गाने आदि का समाचार दूर-दूर तक फैल गया। मुग़ल बादशाह, अकबर, और उसके दरबारी गायक, तानसेन, ने भी सुना।



वे जानते थे कि राजपूतों को मुग़लों से घृणा है अतः उन्होंने हिन्दुओं का भेष धारण किया।



वे मन्दिर में जा ही पहुँचे जहाँ मीरा अपने भगवान का ध्यान लगाये बैठी थी।



जैसे ही भक्त आने लगे उसने भजन गाना शुरू कर दिया। कुछ भक्त उसके साथ गाने भी लगे और कुछ केवल सुन रहे थे...

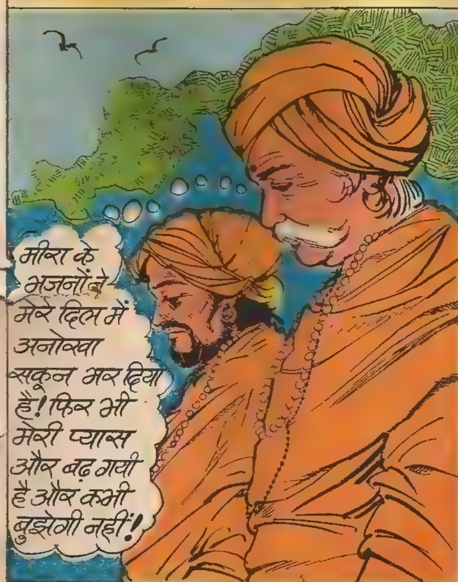
पायोजी मैंने नाम रतन धन पायो,
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।

दिन भर के भजन-कीर्तन में अकबर और तानसेन अपना आपा भी भूल गये। अकबर ने आगे बढ़ कर मीरा के पाँव छुए और एक हार गोपाल की भेंट चढ़ाया।

जिसकी भक्ति में आप डूबी हैं उसी के नाम पर मेरा यह नाचीज़ नज़राना मंज़ूर फ़रमायें।

उसके नाम की भेंट तो मैं अस्वीकार कर ही नहीं सकती।

बादशाह भारी मन से वहाँ से चल दिया।



मुग़ल बादशाह दरबारी गायक, तानसेन, के साथ मीरा के पास आया था- यह बात छिपी न रही..



राणा भोजराज ने भी सुना और क्रोध से पागल हो उठा। पागल हो चाहे न हो - उसकी पत्नी ने अशोभन कार्य किया था। उसने मीरा को बुलवाया...

तुम्हारा यह साहस कि एक मुग़ल को अपने- राजपूत कुँवरानी के चरण छूने दिये! यह साहस कि उसे मन्दिर में आने दिया!



मीरा की गम्भीर शान्ति से उसका क्रोध और बढ़ गया!

राजपूतों के नाम पर तुमने कलंक लगाया है - जा कर किसी नदी-नाले में डूब मरो!!!

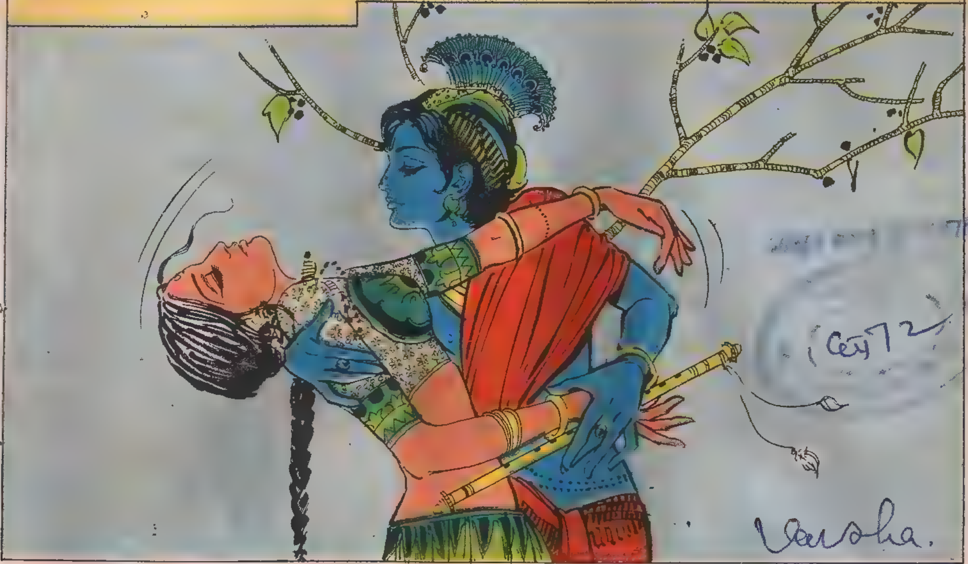
मीरा तो आदर्श हिन्दू पत्नी थी। उसने यह आज्ञा शिरोधार्य की और बिलखती हुई सहेलियों से विदा ली।

अपने गोपाल की मूर्ति को हृदय से लगाये हुए वह नदी की ओर चल दी।

मीरा नदी के तट पर पहुँची। उसी समय मन्दिर के घण्टे बजने लगे। वह नदी में कूदने को हुई कि पीछे से किसी के हाथों ने उसे रोक लिया। उसने गर्दन घुमायी।



उसने देखा कि उसके गोपाल स्वयं खड़े मुस्करा रहे थे। वह अचेत हो गयी।



जब होश आया तब वह उन्हीं की बाँहों में थी।

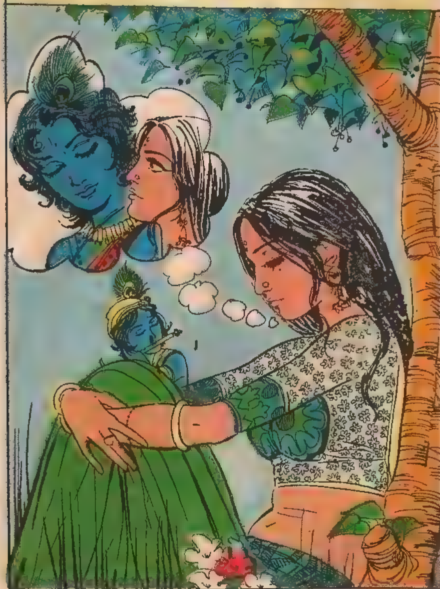
पति के साथ तुम्हारा नाता समाप्त हो चुका। अब तुम मेरी हो। वृन्दावन जाओ और वहीं मुझे प्राप्त होओ।

मेरे नाथ! मेरे स्वामी!

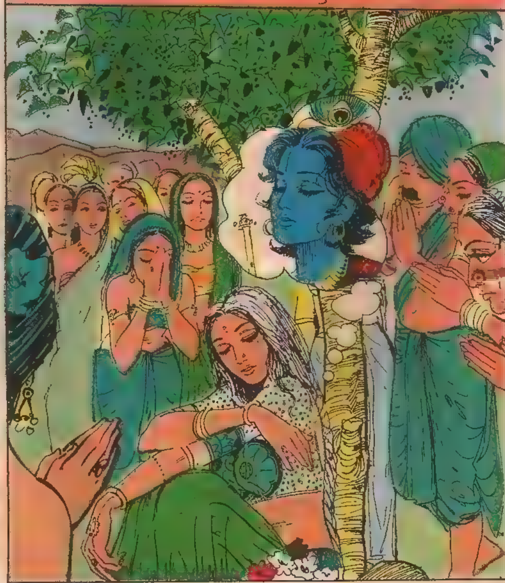
यह आज्ञा पा कर मीरा नाचती-गाती वृन्दावन को चल दी।
मार्ग की कठिनाइयों का उसे भास तक नहीं हुआ।

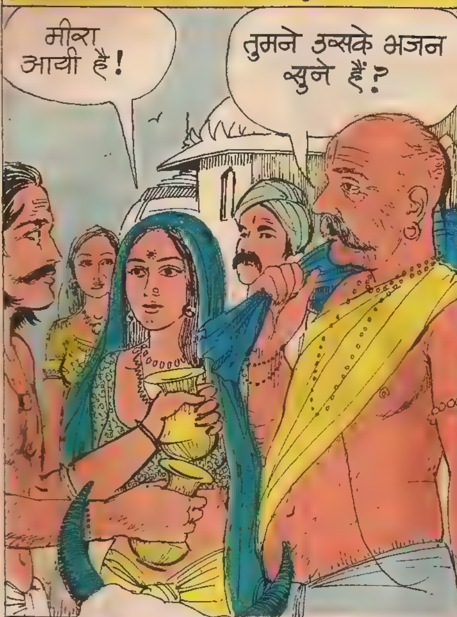
मेरे तो गिरिधर गोपाल,
दूसरा न कोई ...

अन्त में वह वृन्दावन पहुँच गयी।



पहुँचने भर की देर थी-
भक्त लोग एकत्र होने लगे।







भगवान कृष्ण की उस अनन्य भक्त नारी के दर्शनों के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। एक दिन कोई चित्तौड़-वासी आ पहुँचा।

मीराबाई जीवित हैं! यह बात राणा भोजराज को बताऊँगा।

जब वह लौट कर चित्तौड़ पहुँचा -

राणा जी, कुँवरानी जी जीवित हैं!

क्या?!

यह सम्भव नहीं! मुझे एक अवसर और मिला!

उसकी आज्ञा पा कर मीरा जब चली गयी तो भोजराज अपनी कठोर आज्ञा पर बहुत पछताया था।

मीरा जीवित है। मैं उसके पास जा कर क्षमा माँगूँगा!

साधुओं के गेरुए वस्त्र पहन कर भोजराज वृन्दावन पहुँचा। मीरा के सामने जा कर उसने हाथ फैलाये।



भोजराज ने अपने भगवा कपड़े उतार दिये। मीरा अपने पति को देखते ही उसके चरणों में गिर पड़ी।

मुझे क्षमा कर दो, मीरा–
मैं यही भीख माँगता हूँ।
वापस चित्तौड़ चली चलो।

मीरा ने
क्या कभी अपने पति की आज्ञा
टाली है? मैं
चित्तौड़ चलूँगी।

मीरा अपने पति व भक्तों के साथ चित्तौड़ लौटी।

हरि मोरे जीवन प्रान अधार,
और आसरो नाहीं तुम बिनु,
तीनूं लोक मंझार।

मीरा कई वर्षों तक पूर्ण स्वतंत्रता के साथ अपने गोपाल की सेवा-पूजा करती रही।

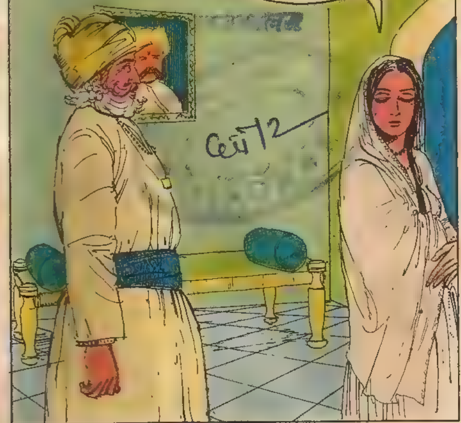
दुर्जनों की संगत मत करो, ईर्ष्या, लोभ, मोह और मद को अपने मन से निकाल फेंको...

मीरा को भोजराज की वधू के रूप में चित्तौड़ आये हुए लगभग दस वर्ष बीते थे कि उसके पति की मृत्यु हो गयी।

भोजराज के पिता ने मीरा को बुलवाया –



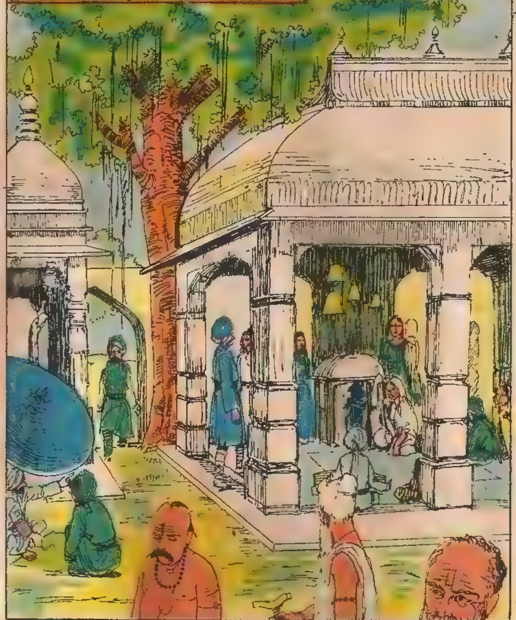
परन्तु मीरा ने अस्वीकार किया।



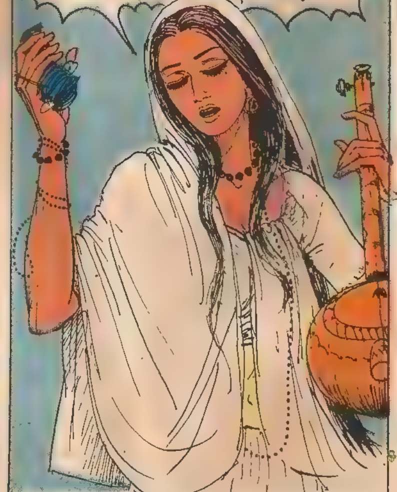
विधवा हो जाने के बाद मीरा पूर्ण रूप से अपने गोपाल की भक्ति में लीन हो जाने को स्वतंत्र हो गयी थी तथापि नये राणा, भोजराज के भाई, ने उसे चैन नहीं लेने दिया।

मेरी आज्ञा है कि अब तुम न तो साधु-सन्तों की संगत करोगी न महल में कृष्ण की मूर्ति के आगे नाचो-गाओगी।


मीरा बहुत दुखी थी ...
गोपाल, महल के मन्दिर में मैं शान्ति से तुम्हारी पूजा नहीं कर सकती। मैं नगर के सार्व-जनिक मन्दिर में जाऊँगी।


और वह वहाँ गयी।


राणा उसकी हँसी उड़ाने लगा कि तू निर्लज्ज है जो साधुओं आदि से मेल-मिलाप करती है -
पति के साथ सती होना तुझे स्वीकार न था! क्या इसीलिए कि भिखमंगों के साथ गुलछर्रे उड़ाये?!


मीरा सारे अपमान को पी कर अपने स्वामी के नाम के भजन गाती रही और नाचती रही।
मीरा प्रभु के हाथ बिकानी। लोग कहैं बिगड़ी।

अपनी साध्वी कुँवरानी के प्रति चित्तौड़ की जनता का प्रेम तथा आदर और बढ़ गया और मीरा का नाम सारे देश में फैल गया।

दूर-दूर से साधु-महात्मा और विद्वान अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उसके पास आने लगे।

स्वामी के चरणों में बैठ कर उपासना करो। व्रत-उपवास, तीर्थ-यात्रा आदि से कुछ प्राप्त नहीं होगा। मन और हृदय से भगवान की भक्ति करो।

राणा का क्रोध सब सीमाएँ लाँघ गया था।



मीरा की भक्ति तो अडिग थी। वह अपने गोपाल का नाम ले-ले कर वैसे ही नाचती-गाती रही।

एक दिन राणा ने फूलों की टोकरी में विषधर सर्प उसके पास भेजने का निर्णय किया।

चित्तौड़ का सबसे विषधर नाग पकड़ो और मीरा के पास ले जाओ। कहना कि उसके स्वामी के लिए पुष्पहार है!

जो आज्ञा, राणा जी।









मीरा को इस फेर-बदल का आभास भी नहीं हुआ और वह लेट गयी। चमत्कार यह हुआ कि कीलें गुलाब की पँखुड़ियों जैसी कोमल हो गयीं।

मीरा रात भर अपने स्वामी के सपनों में खोई हुई चैन से सोती रही।

प्रातःकाल मीरा को नित्य-प्रति की तरह प्रफुल्लित मन से अपने गोपाल की सेवा करते देख कर राणा और उसके दुष्ट सलाहकार आश्चर्यचकित हो गये और क्रुद्ध भी!

मेरे तो स्वामी गोपाल हैं। वे मुझे सब आपत्तियों से बचाते हैं। मुझे अपने स्वामी की सेवा करने से कोई नहीं रोक सकता।

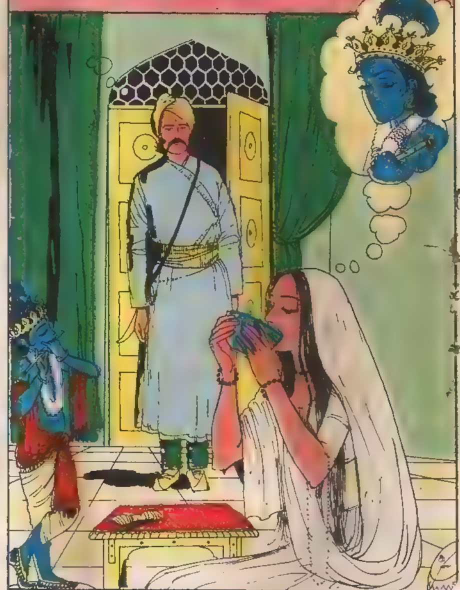
राणा के क्रोध का अन्त नहीं रहा। उसने अपने हाथों से चरणामृत के प्याले में विष मिलाया-



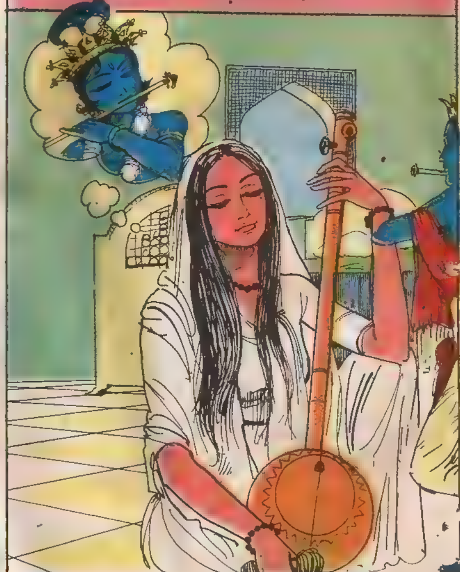
-और अपने विश्वासपात्र आदमी के हाथों मीरा को भिजवाया।




आदमी प्याला मीरा के पास लाया –
मीराबाई, राणा को अपने किये पर बहुत पछतावा है। उन्होंने आपके लिए चरणामृत भेजा है।


मीरा को किसी बात की सुधि रहती ही न थी सो उसने चरणामृत लिया और गट-गट पी लिया –


और वह विष वास्तव में चरणामृत बन गया!
मीरा पर कोई प्रभाव नहीं! मुझे विश्वास नहीं होता!

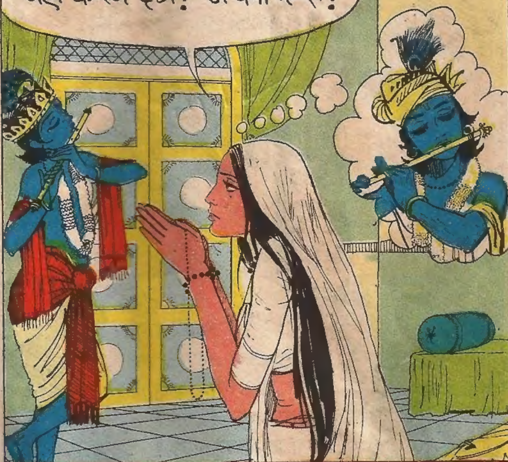

और मीरा वैसे ही मुस्कराती हुई अपने गोपाल के सामने बैठी रही।

बार-बार असफल हो कर राणा ने मीरा को इतना सताने का निर्णय किया कि वह हार मान जाये।

मीरा सार्वजनिक मन्दिर में पाँव न रखने पाये। उसकी निर्लज्जता से राणा परिवार की बदनामी हो रही है!

जो आज्ञा, राणा जी!

मीरा इस बार-बार की बाधाओं से तंग आ गयी।



उसने उस काल के अनन्य सन्त, तुलसीदास, को पत्र लिख कर पूछा कि मैं क्या करूँ।

सन्त जो राय देंगे वही करूँगी। वे बुद्धिमान हैं और मेरे स्वामी से मेरी तरह स्नेह करते हैं।



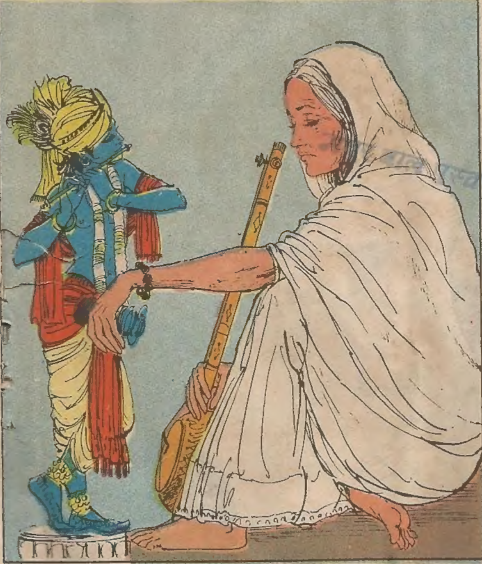
मीरा ने यह बात मान कर चित्तौड़ छोड़ दिया। वह मेड़ता चली गयी जहाँ उसका चाचा शासन करता था। उसने प्रेम से मीरा का स्वागत किया–

राणा बहुत क्रुद्ध है। मैं उसका राज्य छोड़ कर आपके पास आयी हूँ। मेरे स्वामी अप्रसन्न हो जायें तो मैं किसकी शरण जाऊँगी?

मै सब समझता हूँ, बेटी।

उसे शान्ति से पूजा-अर्चना करने की पूरी स्वतंत्रता मिल गयी।

म्हाने चाकर राखो जी।
गिरिधारी लेला, चाकर राखो जी।
चाकर रहसूँ, बाग लगासूँ,
नित उठ दरसण पासूँ जी॥





यह निश्चय कर के मीरा मथुरा गयी।

साँवरा, म्हारी प्रीत निभाजो जी।

वृन्दावन -

मेरे तो गिरिधर गोपाल,
दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट,
मेरो पति सोई।

फिर द्वारिका -

... घुँघरू बाँध मीरा नाची रे...
... रे नारायण की,
... हि हो गयी दासी रे...